विद्या भारती संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

अप्रैल 2023 चैत्र-वैशाख विक्रमी सं. 2080

विद्या भारती की अखिल भारतीय साधारण सभा: बेंगलुरु

पांच पुस्तकों का हुआ विमोचन

मा. डॉ. कृष्णगोपाल सह-सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विशेष सान्निध्य

मातृभाषा में शिक्षा सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन पश्चिम की सुनामी का प्रहार हमारे ऊपर भी है। फिर भी हमारा सुविचारित मत है कि हमारे विद्यालय मातृभाषा में ही चलें। अंग्रेज़ी के अभ्यास की कमी को दूर करते हुए अपनी भाषा का माध्यम ही चुनना है। शिक्षण की गुणवत्ता व भाषा की गुणवत्ता बनाए रखना आवश्यक है।

शिक्षा की निष्पत्ति - अखण्ड व्यक्तित्व का निर्माण - आचार्य श्रीतुलसी

विद्या भारती की अखिल भारतीय साधारण सभा बेंगलुरु में सम्पन्न

बेंगलुरु | विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की अखिल भारतीय साधारण सभा बैठक चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से तृतीया विक्रमी संवत 2080, दिनांक 7 से 9 अप्रैल 2023 को जनसेवा विद्याकेन्द्र, चन्नेनहल्लि बेंगलुरु में सम्पन्न हुई। देशभर से 284 प्रतिनिधियों ने इस साधारण सभा में भाग लिया। यह बैठक प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। देशभर में कार्य की स्थिति, कार्य विस्तार, शिक्षा की गुणवत्ता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन, पूर्व छात्रों की सक्रियता आदि विषयों पर इस बैठक में प्रमुखता से चर्चा की गई।

प्रस्ताविक उद्बोधन में अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री डी रामकृष्णराव ने कहा कि समाज में विद्या भारती के अनुकूल वातावरण बन रहा है। विद्या भारती के कार्यकर्त्ताओं के लिए अपनी सहभागिता एवं सक्रियता से कार्य करने के अनेक अच्छे अवसर सामने हैं। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की भूमिका स्पष्ट होती जा रही है। NEP के अनुसार आचार्यों के प्रशिक्षण विद्या भारती ने किए है। किंतु सघन व सतत प्रशिक्षण की आवश्यकता है। विद्या भारती के पूर्व छात्र 65 देशों में रह रहे हैं। उच्च शिक्षा में भी विद्या भारती की गति बढ़ी है। उन्होंने कहा कि हमें अपने कार्य का दायरा बढाना होगा किंतु मूल सिद्धांत को कभी नहीं छोड़ेंगे। आवश्यकता के अनुसार तैयार होना व भविष्य के बारे में भी विचार करना होगा।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के नाते उपस्थित रहे प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ. एम.के. श्रीधर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्य में 2017 से ही विद्या भारती का महत्वपूर्ण योगदान हो रहा है। डॉ. कस्तूरीरंगन् ने क्रियान्वयन की दृष्टि से विद्या भारती से अपेक्षा की है। "We can make policies by words and letter but implementation can be done only by commitment." यह अनुष्ठान विद्या भारती अपने नेटवर्क व रिसोर्स से कर सकती है। उन्होंने बताया कि अप्रैल अंत तक सभी स्तरों के लिए NCF तैयार होने की संभावना है और फरवरी 2024 तक सभी 22 भारतीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों के तैयार होने की योजना पर कार्य हो रहा है।

साधारण सभा बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ -

विद्या भारती के कार्य को लगभग 75 वर्ष होने जा रहे हैं। इस लम्बी यात्रा में बहुत कुछ देखा है, अनुभव किया है। बड़े-बड़े शिक्षाविदों के साथ परामर्श किये हैं। विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं की रिपोर्ट पर चर्चाएँ की हैं। एक गैर सरकारी संगठन होने के बावजूद विविधताओं वाले देश में हमारी प्रगति उल्लेखनीय है। महानगरों, ग्रामों तथा जनजाति क्षेत्रों की बहुविविधताओं के होते हुए भी हमने अपना कार्य खड़ा किया है। 15-16 भाषाओं में हमारे विद्यालय चलते हैं। राज्यों की मातृभाषा के साथ जुड़कर अनेक कार्य किये हैं।

आज समाज के सभी क्षेत्रों में हमारे विद्यार्थी हैं। लेकिन देश बहुत बड़ा है। इस तुलना में हमारा काम अभी भी बहुत बड़ा नहीं है। 130 करोड़ के देश में 35 लाख बच्चे कोई बड़ा अंक नहीं है। इसलिए अब आगे बढ़ना है। हमें क्या छोड़ना है, क्या जोड़ना है, उचित-अनुचित का विचार करके करना होगा। अपने विश्लेषण के आधार पर यह सुनिश्चित करना होगा। यह चिंतन ऊपर से लेकर नीचे तक हर स्तर पर करना होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति समयानुकूल नवोन्मेषों एवं वन मूल्यों से युक्त है जिसका क्रियान्वयन हमको पूर्ण तैयारी एवं मनोयोग से करना है। देश में अप्रत्याशित रूप से परिवर्तन हो रहे हैं। देश की ग्रोथ रेट आज 2.5 पर आ गयी है। घरों में बच्चे कम हैं। इसलिए बच्चों की शिक्षा अच्छी हो यह विचार NEP में परिलक्षित हो रहा है। सरकार व अभिभावक सभी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बारे में सोचने लगे हैं। विद्या भारती के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में हमको क्या करना व क्या नहीं करना? कैसे करना? यह विचार करने की आवश्यकता है।

विद्या भारती के पूर्व छात्रों के पोर्टल पर 9 लाख का डेटा संकलित हुआ है। अनुमान से उनकी संख्या लगभग 40 लाख होगी। हमें अपने पूर्व छात्रों में **"मेरा विद्यालय"** यह भाव जगाना है। तैत्तिरीय उपनिषद् की **'शिक्षावल्ली'** का यह मन्त्र दीक्षा मन्त्र का कार्य कर सकेगा - **"सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्य देवो भव। मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। अतिथि देवो भव। यानि यानि अस्माकम् सुचरितानि, तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। श्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रया देयम्। अश्रद्धया न देयम्।"**

डॉ. कृष्णगोपाल ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में अनेक संकटों में एक संकट भाषा के माध्यम का है। दुनिया के सभी श्रेष्ठ शिक्षाविदों का मानना है कि मातृभाषा में शिक्षा सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन पश्चिम की सुनामी का प्रहार हमारे ऊपर भी है। फिर भी हमारा सुविचारित मत है कि हमारे विद्यालय मातृभाषा में ही चलें। अंग्रेज़ी के अभ्यास की कमी को दूर करते हुए अपनी भाषा का माध्यम ही चुनना है। शिक्षण की गुणवत्ता व भाषा की गुणवत्ता बनाए रखना आवश्यक है। **आगे जारी ...**

साधारण सभा के समापन सत्र में डॉ. कृष्णगोपाल ने कहा कि विश्व परिदृश्य में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण नई चुनौतियाँ हम सबके सामने है। भौतिक जगत के प्रभाव के कारण विश्व में सभ्यात्मक परिवर्तन हुआ है। सूचनाओं के एकत्रीकरण की ओर विश्व बढ़ा है, परन्तु मानव निर्माण की समग्र दृष्टि का अभाव हो गया है। भारत की आत्मा भिन्न है। भारत ने मन व हृदय की गहराई बढाने वाला ज्ञान विश्व को दिया है। नवीन पीढ़ी में आध्यात्मिक भाव जगे, उन्हें लौकिक शिक्षा मिले, ये विद्या भारती का लक्ष्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति व विद्या भारती की अनुभव सिद्ध बातों का समन्वय करते हुए अपने लक्ष्य की ओर हमें बढ़ना है।

तीन दिन चली इस साधारण सभा बैठक में विद्या भारती के अंतर्गत चलने वाले विभिन्न विषयों यथा – खेलकूद, विज्ञान, गणित, सेवा शिक्षा, जनजाति क्षेत्र की शिक्षा, पूर्वछात्र परिषद, संस्कृति बोध परियोजना, शिशुवाटिका, मानक परिषद आदि का वृत्त भी प्रस्तुत किया गया। भौगोलिक विस्तार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन, विद्यालयों में गुणवत्ता सुधार, शिक्षा विमर्श, वित्त प्रबंधन पर विशेष चर्चा की गई।

तीन दिन चली इस साधारण सभा बैठक में विद्या भारती के अंतर्गत चलने वाले विभिन्न विषयों यथा – खेलकूद, विज्ञान, गणित, सेवा शिक्षा, जनजाति क्षेत्र की शिक्षा, पूर्वछात्र परिषद, संस्कृति बोध परियोजना, शिशुवाटिका, मानक परिषद आदि का वृत्त भी प्रस्तुत किया गया। भौगोलिक विस्तार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन, विद्यालयों में गुणवत्ता सुधार, शिक्षा विमर्श, वित्त प्रबंधन पर विशेष चर्चा की गई।

साधारण सभा बैठक में समाज परिवर्तन की दृष्टि से चलाए जाने वाले विशेष प्रकल्पों की प्रस्तुति वहां के कार्यकर्ताओं ने की। इनमें झँस्कार वेली लद्दाख, तेपला जिला अम्बाला हरियाणा, चंद्रपुर, गुवाहाटी (असम), थुआमूल, कालाहांडी (उड़ीसा) जनजाति क्षेत्र, कोठारा परियोजना बांसवाड़ा (राजस्थान), वैदिक विद्यापीठम चिचोट हरदा (मध्य प्रदेश), पांडातराई (छत्तीसगढ़) का पीपीटी द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया।

कार्य की वर्तमान स्थिति

- **कार्ययुक्त जिले – 658**
- **औपचारिक विद्यालय – 12065**
- **एकल विद्यालय – 3941**
- **संस्कार केंद्र – 4093**
- **कुल शिक्षण केंद्र – 19597**
- **महाविद्यालय – 53**

विशेष आकर्षण

- **विद्यालय के विद्यार्थियों, आचार्यों व अभिभावक माताओं द्वारा लोक कला आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण।**
- **अभिभावक माताओं द्वारा मातृहस्ते भोजन।**
- **विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान की पुस्तकों व चाणक्य विश्वविद्यालय बेंगलुरु के स्टॉल पर दिखा उत्साह।**
- **विशाल परिसर में सुव्यवस्थित रहा आयोजन।**

आगे जारी

पांच पुस्तकों का हुआ विमोचन –

1. श्री स्वतंत्रते, लेखक व संपादक : रवि कुमार
2. ज्ञान की बात ३, लेखक : वासुदेव प्रजापति
3. आचार्य ब्रह्मगुप्त, लेखक : वासुदेव प्रजापति
4. आर्ष साहित्य का संक्षिप्त परिचय, सम्पादक : वासुदेव प्रजापति
5. दादा-दादी की कहानियां, लेखिका : मंजरी शुक्ला

(प्रकाशक व प्राप्ति स्थान : विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान)

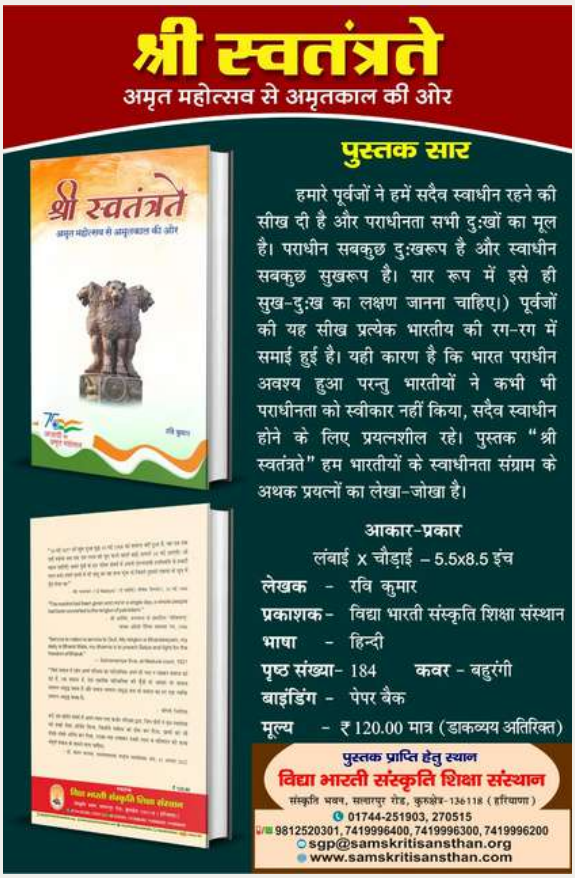

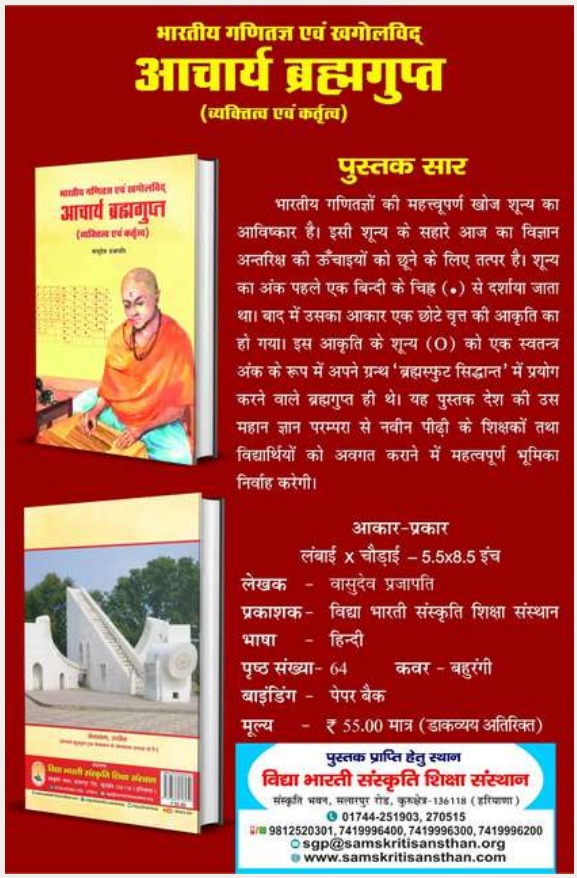

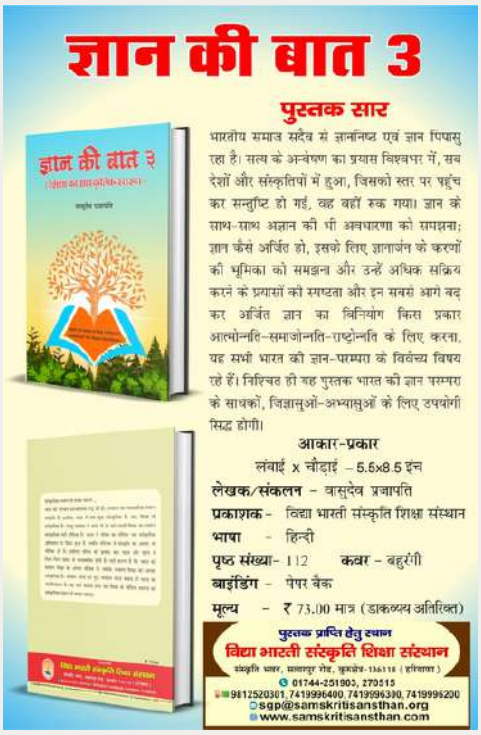

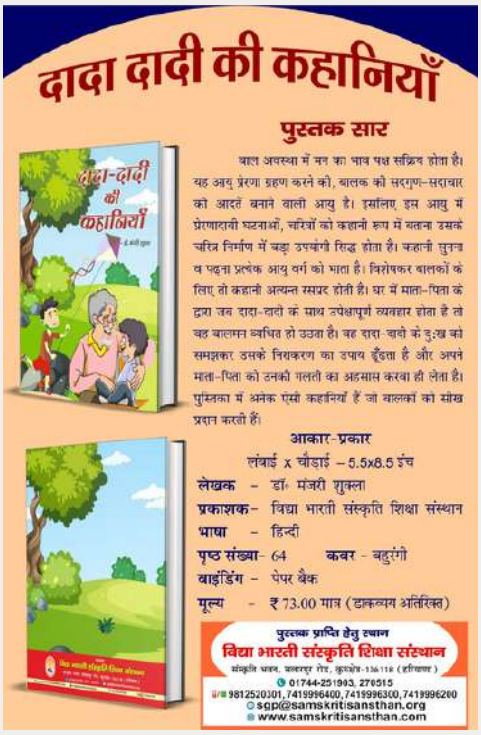

कार्यकर्ताओं के दायित्व / केन्द्र परिवर्तन की सूचना

विद्या भारती की अखिल भारतीय साधारण सभा बैठक, बेंगलूरु में कार्य व्यवस्था की दृष्टि से कुछ कार्यकर्ताओं के दायित्व / केन्द्र में परिवर्तन की घोषणा माननीय अध्यक्ष द्वारा की गई थी।

1. श्री रामय, संगठनमंत्री कानपुर प्रान्त से संगठनमंत्री हरियाणा प्रान्त केन्द्र कुरुक्षेत्र।
2. श्री तारकदास सरकार, संगठनमंत्री दक्षिण बंग प्रान्त से संगठनमंत्री ओडिशा प्रान्त, केन्द्र भुवनेश्वर।
3. श्री रमाकान्त महन्त, संगठनमंत्री ओडिशा प्रान्त से संगठनमंत्री उत्तर बंग, केन्द्र सिलीगुडी।
4. श्री परिमल राय कगार सह-संगठनमंत्री उत्तर बंग अब कार्यालय प्रमुख उत्तर बंग।
5. श्री संजीव दास, सह-संगठनमंत्री दक्षिण बंग एवं पूर्व क्षेत्र के क्षेत्रीय नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा प्रमुख अब केवल क्षेत्रीय नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा प्रमुख, पूर्व क्षेत्र। केन्द्र केशियारी।
6. श्री पार्थ घोष, क्षेत्रीय सह संगठनमंत्री, पूर्व क्षेत्र दायित्व यथावत। अब केन्द्र सिलीगुडी के स्थान पर कोलकाता।
7. श्री योगेन्द्र सिंह , पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यकारिणी सदस्य दायित्व यथावत। केन्द्र सिलचर के स्थान पर गुवाहाटी।
8. श्री नीरव घेलानी, विभाग संगठनमंत्री, शिवसागर विभाग (उत्तर असम प्रान्त)
9. श्री गोविन्द सिंह, क्षेत्र सह-संगठनमंत्री राजस्थान क्षेत्र दायित्व यथावत। केन्द्र अजमेर के स्थान पर जयपुर।
10. श्री अमरनाथ कर्नाटक प्रान्त कार्यालय प्रमुख केन्द्र बेंगलूरु।
11. श्री रजनीश पाठक, प्रान्त सेवा प्रमुख, अवध प्रान्त अब संगठनमंत्री, जन शिक्षा समिति, कानपुर प्रान्त केन्द्र कानपुर।
12. श्री राजीव गुप्ता, प्रधानाचार्य श्रीजी बाबा सरस्वती विद्या मन्दिर, गोवर्धन रोड, मथुरा(माध्यमिक शिक्षा के अखिल भारतीय संयोजक)।

वैचारिक लेख

शिक्षा की निष्पत्ति - अखण्ड व्यक्तित्व का निर्माण - आचार्य श्रीतुलसी

जीवन जीना एक बात है और विशिष्ट जीवन जीना दूसरी बात है। ऐसा जीवन जो दुसरों के लिये उदाहरण बन सके, विशिष्ट जीवन होता है। ऐसा जीवन तभी जिया जा सकता है, जब कि उसे सही ढंग से निर्मित किया जा सके। जीवन का निर्माण करने में अनेक तत्त्वों का योग रहता है। उनमें कुछ तत्त्व है- संस्कार, वंशानुक्रम, वातावरण, माँ का व्यक्तित्व, शिक्षा आदि। इनमें कुछ तत्त्व सहज और कुछ परोक्ष रूप में सक्रिय रहते हैं, पर शिक्षा का प्रयोग सार्थक उद्देश्य के साथ प्रयत्नपूर्वक होता है। वास्तव में वही शिक्षा शिक्षा है, जो जीवन का निर्माण कर सके। शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी यदि जीवन नहीं बनता है तो शिक्षा की गुणात्मकता के आगे प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

शिक्षा के साथ जीवन-निर्माण का निश्चित अनुबन्ध है। जहाँ तक यह अनुबन्ध पूरा नहीं होता, वहाँ कुछ किन्तु परन्तु खटकने लगता है। व्यक्ति भोजन करे और उसकी भूख करनेवाला भस्मक व्याधि से पीडित हो। अन्यथा मात्रा-भेद हो सकता है, पर भोजन के साथ भूख मिटने की अनिवार्यता है।

इसी प्रकार शिक्षा मिले और जीवन का निर्माण न हो, इसमें शिक्षा-पद्धति, शिक्षक या विद्यार्थी की कोई-न-कोई कमी अवश्य कारण बनती है। शिक्षा- पद्धति त्रुटिपूर्ण या अपूर्ण हो, शिक्षक का चरित्र, निष्ठा और पुरुषार्थ सही न हो अथवा विद्यार्थियों में शिक्षा प्राप्त करने की अर्हता न हो, उसी स्थिति में शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं होता। शिक्षा के द्वारा जीवन-निर्माण का अर्थ है- विद्यार्थी के सर्वांगीण एवं अखण्ड व्यक्तित्व का निर्माण। यह मनुष्य की दुर्बलता है कि वह खण्ड- खण्ड में ता है। अपने व्यक्तित्व को समग्र रूप से बनाने या संवारने की चिन्ता उसे नहीं होती। उसके सामने अखण्ड व्यक्तित्व वाला कोई आदर्श भी नहीं होता। ऐसी स्थिति में वह अपने व्यक्तित्व को खण्डों में बाँट लेता है। खण्डित व्यक्तित्व प्रत्येक युग की ऐसी त्रासदी है, जिसे वर्तमान और भावी दो-दो पीढ़ियों को भोगना होता है।

जीवन-निर्माण या व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से कितनी ही ऊँची शिक्षा दी जाय कितने ही अच्छे एवं योग्य शिक्षकों का योग मिले, किन्तु जब तक विद्यार्थी की भूमिका ठीक नहीं होती तब तक समय और श्रम का सही उपयोग नहीं हो सकता। जैन-आगम के उत्तराध्ययन में विद्यार्थी की अर्हता के कुछ मानदण्ड निर्धारित किये गये हैं। उनके अनुसार शिक्षा के योग्य वह विद्यार्थी होता है जो

(1) हास्य न करें,
(2) इन्द्रियों और मन को नियन्त्रित रखे.
(3) किसी की गोपनीय बात का प्रकाशन न करें,
(4) चरित्र से हीन न हो,

आगे जारी ...

(5) चारित्रिक दोषों से कलुषित न हो,
(6) रसों में अति लोलुप न हो,
(7) क्रोध न करे और
(8) सत्य में रत हो।

यह आवश्यक है कि ज्ञान मन्दिर में प्रवेश करने से पहले ही विद्यार्थी को प्रारम्भिक संस्कार दिये जायें, क्योंकि जब बालक का जीवन गलत संस्कारों से भावित हो जाता है, तब संस्कार-परिवर्तन की बात कठिन हो जाती है, इसीलिये प्राचीनकाल में बच्चों को गुरुकुलों में रखकर पढ़ाया जाता था। वहाँ उन्हें जो शिक्षा दी जाती थी, उसका आधार केवल पुस्तकें नहीं होती थीं। उस समय दी जाने वाली शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविका नहीं होता था। जीविका के साथ शिक्षा को जोड़ना ही शिक्षा नीति का अतिक्रमण करना है। यह बात विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के लिये समान रूप से लागू होती है। शिक्षक यदि शिक्षा को जीविका का साधन मात्र मानता है तो वह विद्यार्थी को पुस्तक पढ़ा सकेगा, पर जीवन-निर्माण की कला नहीं सिखा सकेगा। इसी प्रकार विद्यार्थी यदि जीविकोपार्जन के उद्देश्य से पढ़ता है तो वह डिग्रियाँ भले ही उपलब्ध कर लेगा, किंतु ज्ञान के शिखर पर नहीं चढ़ सकेगा।

शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य यदि केवल बौद्धिक विकास अथवा डिग्री पाना ही हो, तो यह दृष्टिकोण की संकीर्णता है, क्योंकि शिक्षा का सम्बन्ध शरीर, मन, बुद्धि और भाव-सबके साथ है। एकांगी विकास की तुलना शरीर की उस स्थिति के साथ की जा सकती है, जिसमें सिर बड़ा हो जाय और हाथ-पाँव दुबले-पतले रहे अथवा हाथ-पाँव मोटे हो जायें और सिरका विकास न हो। शरीर का अंसतुलित विकास उसके भौडेपन को प्रदर्शित करता है। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का असंतुलित विकास उसके भीतरी भाँडेपन की अभिव्यक्ति कैसे नहीं करेगा?

जीवन के समग्र विकास की दृष्टि से शिक्षा को रचनात्मक मोड देने के लिये आवश्यक है कि निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। विशिष्ट प्रशिक्षण के क्रम में कुछ महत्वपूर्ण उपक्रम ये है (१) जीवन-मूल्यों की शिक्षा, (२) मानवीय सम्बन्धों की शिक्षा, (३) भावनात्मक विकास की शिक्षा तथा (४) सिद्धान्त और प्रयोग के समन्वय की शिक्षा।

शिक्षा के ये उपक्रम विद्यार्थी में जिज्ञासा, बुभूषा और चिकीर्षा की भावना को जगा सकते हैं। जिज्ञासा का अर्थ है जानने की इच्छा। जब यह इच्छा घनीभूत हो जाती है, तब विद्यार्थी प्रत्येक बात को बहुत बारीकी के साथ ग्रहण करता है। तत्व को जानने-समझने की स्थिति में परिपाक आने पर व्यक्ति में कुछ होने की भावना जन्म लेती है। इस भावना का नाम है-बुभूषा। जो कुछ होना चाहेगा, करने की इच्छा जागेगी। कुछ करने की इच्छा जब विशिष्ट क्रियायोग के साथ जुड़ जाती है, तब यह विद्यार्थी को अखण्ड व्यक्तित्व प्रदान कर सकती है। अखण्ड व्यक्तित्व के निर्माण की एक प्रायोगिक प्रक्रिया का नाम है जीवन-विज्ञान। जीवन-विज्ञान जीवन की ऐसी कला है, जो विद्यार्थी के बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास में संतुलन लाती है।

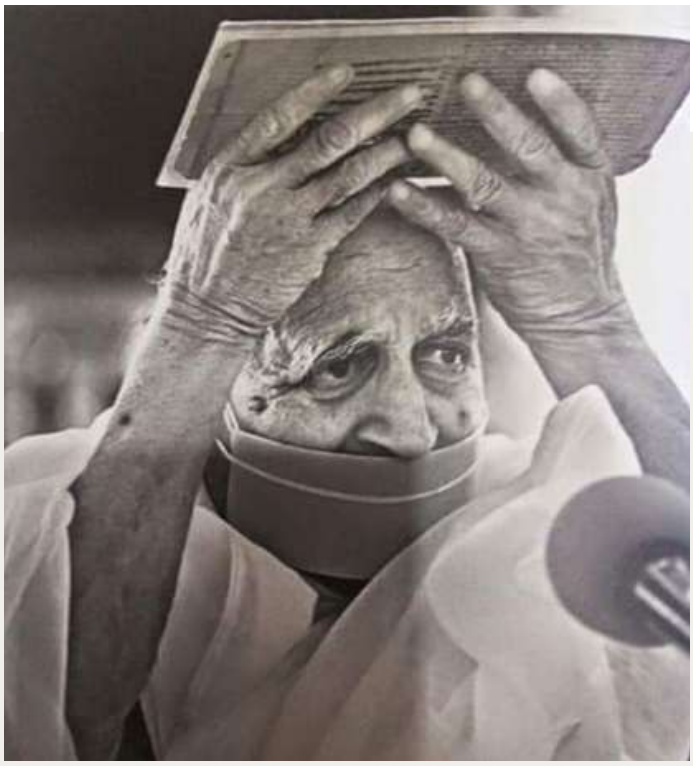

इस प्रक्रिया में कायोत्सर्ग, योगासन, शरीर-विज्ञान, प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि का क्रमिक अभ्यास कराया जाता है। इस अभ्यास से शरीरगत ग्रन्थियों के साथ बदलते हैं, नाड़ी तंत्र संतुलित रहता है और आदतों में परिवर्तन होता है।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद यहाँ शिक्षा की दृष्टि से कई नये आयाम खुले। उन आयामों से अच्छे-अच्छे डाक्टर, अभियन्ता, वैज्ञानिक आदि सामने आये पर आत्मवान् व्यक्तियों के निर्माण की प्रक्रिया बहुत शिथिल हो गयी। आत्मवान् वह होता है, जो आत्मविद्या में निष्णात बन जाता है। आत्मविद्या पाने का अर्थ है अपनी पहचान से परिचित होना। पहचान किसकी? नाम या रूप की? यह सारी पहचान ऊपर की है। इस पहचान को करने वाला जो अज्ञात तत्व है, जो इस शरीर के भीतर है, उस अज्ञात को ज्ञात करने वाला आत्मवान् हो सकता है, विद्यावान हो सकता है।

आत्मा की पहचान का माध्यम है धर्म। ऐसा धर्म, जो मानवीय मूल्यों के विकास से, वन की पवित्रता से और व्यवहार-शुद्धि के साथ जुड़ा हुआ है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में धर्म की शिक्षा को कोई स्थान नहीं है। शिक्षा में धर्म का प्रवेश होने से साम्प्रदायिकता के उभरने का भय है। किन्तु यह भय उन लोगों को है, जो धार्मिक कट्टरता और अन्धविश्वासों से घिरे हुए हैं। अन्यथा धर्म की शिक्षा का अर्थ है- सत्य और अहिंसा की शिक्षा, सहिष्णुता और समन्वय की शिक्षा, भ्रातृत्व और सहयोग की शिक्षा तथा नैतिकता और उदारता की शिक्षा ऐसी शिक्षा को कोई भी चिन्तनशील व्यक्ति नकार नहीं सकता। पर जो लोग धर्म के नाम से ही परहेज करते हैं, वे यदि जीवन-विज्ञान के नाम से एक समग्र और प्रायोगिक शिक्षाक्रम को आगे बढ़ा सकें तो जीवन-निर्माण की समस्या का स्थायी हल निकल सकता है।

- आचार्य श्रीतुलसी

देश का पहला डिजिटल स्कूल जयुपर में, भारी बैग ले जाने से बच्चों को मिली निजात

जयुपर। अब छात्रों को पढ़ने के लिए विद्यालय जाने पर पाठ्य-पुस्तकों और भारी बैग ले जाने की जरूरत नहीं होगी। ग्लोबल स्टैंडर्ड की शिक्षा देने के उद्देश्य से राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित आदर्श विद्या मंदिर देश का पहला बैगलेस स्कूल बन गया है। इस पहल से विद्या भारती के 3 हजार 480 विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। आश्रय संस्था ने एडुफ्रंट के सहयोग से डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टम पर आधारित पायलट प्रोजेक्ट वन टैबलेट पर चाइल्ड प्रोग्राम के तहत छठी से लेकर बारहवीं कक्षा तक के 25 शिक्षकों सहित 350 विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित कर क्लासेज का डिजिटलाइजेशन किया है।

साइंस, इंनियरिंग और मैथमेटिक्स

टैबलेट पर साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथमेटिक्स की ट्रेनिंग देकर छात्रों को आधुनिक शिक्षा के साथ टेक्नोलॉजी में भी निपुण बनाया जाएगा। यहां पर विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तकों और ब्लैकबोर्ड के बिना शिक्षकों से टैबलेट के माध्यम से सभी विषय पढ़ रहे हैं। इसके लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों को विशेष ट्रेनिंग दी गई है। डिजिटल क्लासेज का सकारात्मक पहलू यह भी है कि विद्यार्थी घर बैठे टैबलेट के माध्यम से शिक्षकों से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। टैबलेट में पूरा पाठ्यक्रम समाहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति से ही विकसित होगा देश

महामहिम राज्यपाल माननीय राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर का उद्बोधन

बटहा (बिहार)। सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल, बटहा के रजत जयंती वर्ष पर महामहिम राज्यपाल माननीय राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने डॉ. रामस्वरूप महतो की प्रतिमा का अनावरण एवं बाल वाटिका का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल ने कहा कि बिहार का अतीत गौरवशाली रहा है। यहां नालंदा जैसे विश्वविद्यालय रहे हैं। बिहार के विद्यार्थी देश के विभिन्न राज्यों में हैं। बिहार के छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाहर जाने की आवश्यकता क्यों है? हमें अपनी त्रुटियों को पहचानने की आवश्यकता है। हमारे देश की अपनी सभ्यता रही है, अपनी संस्कृति रही है। बीच के काल खंडों में इस पर विचार नहीं किया गया, लेकिन देर से ही सही एक उदार शिक्षा नीति लेकर हम आए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर अपने देश को परम वैभव की ओर ले जाना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। शिक्षा नीति से ही देश विकसित होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारी प्राचीन गौरवशाली परंपरा से निकली है। यह हमें जमीन से जोड़ने वाली है। औपनिवेशिक से बाहर निकालने वाली शिक्षा नीति है।

देश को 1947 में आजादी मिली लेकिन यह एक राजनीतिक आजादी थी। आने वाले 25 वर्ष स्वजागरण वाले होंगे। हमारी अपनी परंपरा होगी। स्वस्थ शिक्षा होगी। हमारी शिक्षा इस प्रकार की हो, कि विश्व के लोग पुनः यहां शिक्षा प्राप्त करने आने लगें। आगामी 25 वर्षों में हमारा देश सोने की चिड़िया नहीं, सोने का शेर बनेगा। हमारा विश्वास इस दिशा में जाना चाहिए। ऋषियों एवं मनीषियों के विचारों को लेकर ही शिक्षा नीति बनाई गई है।

आचार्य प्रशिक्षण वर्ग

बच्चों का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षक का प्रथम दायित्व

नरसिंहपुर। विद्या भारती महाकौशल प्रांत द्वारा आयोजित सामान्य आचार्य प्रशिक्षण वर्ग के समापन समारोह में समाजसेवी डॉ. सचिन्द्र मोदी ने कहा कि बच्चों का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षक का प्रथम दायित्व है। राज्यसभा सांसद श्री कैलाश सोनी, श्री विवेक शेंडे क्षेत्र मंत्री विद्या भारती, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. नारायण सिंह पटेल अध्यक्ष माधव ग्राम भारती नरसिंहपुर, श्री हरप्रसाद जिला शिक्षा अधिकारी नरसिंहपुर एवं श्री त्रियुगीनारायण प्रांत प्रमुख विद्या भारती एवं श्री बसंत खेरोनिया ने भी विचार व्यक्त किए। विद्या भारती महाकौशल प्रांत के प्रांत प्रमुख त्रियुगीनारायण ने वर्ग के सफल संचालन के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी बंधुओं का आभार व्यक्त किया।

प्रांतीय विषय प्रमुख / संकुल प्रमुख कार्यशाला

देवघर(झारखंड)| विद्या विकास समिति झारखंड द्वारा प्रांतीय विषय प्रमुख / विषय सह प्रमुख और संकुल प्रमुख एवं संकुल संयोजकों की दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 15-16 अप्रैल 2023 को उमा नलिनी ब्रह्म सरस्वती विद्या मंदिर कुंडा देवघर में किया गया। इस अवसर पर अध्यक्षता करते हुए बिनोवा भावे विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव एवं विद्या विकास समिति झारखंड के उपाध्यक्ष श्री सतीश्वर प्रसाद सिन्हा ने कहा कि विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों की कार्ययोजना सराहनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है। प्रत्येक विषय के लिए सूक्ष्मता के साथ जिस प्रकार यहां चिंतन मनन होता है, वह कहीं और देखने को नहीं मिलता। विद्या विकास समिति के प्रदेश सचिव श्री अजय कुमार तिवारी ने बताया कि विद्या विकास समिति के प्रदेश सचिव श्री अजय कुमार तिवारी ने बताया कि कार्यशाला में 31 विषयों के विषय प्रमुखों एवं विषय सह प्रमुखों ने वार्षिक योजना प्रस्तुत की। विद्या भारती के कार्यकर्ता केवल शिक्षा देने का कार्य नहीं करते बल्कि समाज में जागरण लाने का कार्य भी करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आधार बनाकर अपने विद्यालयों की शिक्षा को सुदृढ़ बनाना ही हमारा उद्देश्य है। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति की सचिव डॉक्टर भारती प्रसाद ने किया। विद्या विकास समिति के पूर्णकालिक श्री अखिलेश कुमार, श्री फणींद्र नाथ झा, श्री सुरेश मंडल, श्री तुलसी प्रसाद ठाकुर, श्री विवेक नयन पांडे, श्री नीरज कुमार लाल, श्री राजेंद्र सोरेन, श्री रंथु उरांव, श्री टाना भगत, प्रधानाचार्य श्री आनंद कुमार मिश्र आदि उपस्थित रहे।

विद्यालय दक्षता वर्ग प्रमुख कार्यशाला

नई दिल्ली। विद्या भारती दिल्ली प्रान्त के प्रशिक्षण विभाग द्वारा 13 अप्रैल 2023 को ललित महाजन एसवीएम वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, वसंत विहार, नई दिल्ली में विद्यालय दक्षता वर्ग प्रमुख कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में विद्या भारती, दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री श्री रवि कुमार ने विद्यालय में दक्षता वर्ग आयोजित करने की आवश्यकता, संकल्पना, उपयोगिता एवं उसके आउटकम के बारे में जानकारी दी और पंच प्राणों अर्थात् आचार्य, छात्र, अभिभावक, प्रबंध समिति एवं पूर्व छात्रों के प्रशिक्षण संबंधी बिंदुओं पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही विद्यालय दक्षता वर्ग प्रमुखों से विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप तनाव रहित होकर, आनंदमय भावानुभूति के साथ सतत सार्थक प्रयत्नशील रहते हुए कार्य करने का आह्वान किया।

कार्यशाला में दिल्ली प्रांत प्रशिक्षण संयोजक श्री संजय शर्मा, प्रांतीय शैक्षिक संयोजक श्री उपेंद्र कुमार शास्त्री, सह संयोजिका श्रीमती शालिनी मिड्ढा एवं प्रांतीय प्रशिक्षण टोली की सदस्य श्री ऋतु सूद, श्रीमती मीनू गुप्ता की सहभागिता के साथ 39 प्रतिभागी शामिल रहे।

विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप कार्य करें- श्री रवि कुमार

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर देवीधुरा के नवीन भवन का लोकार्पण

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर देवीधुरा के नवीन भवन का लोकार्पण के अवसर पर श्री राजशेखर जोशी एवं प्रान्त संगठन मंत्री श्री भुवन चंद्र विशेष रूप से उपस्थित रहे।

विद्यालयों में मनाया गया पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल 2023

पृथ्वी दिवस के उपलक्ष पर विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यार्थियों ने पृथ्वी दिवस पर विभिन्न प्रकार की पेंटिंग बनाई एवं स्लोगन लिखे !

1996 बैच के विद्यार्थियों का पुनर्मिलन कार्यक्रम

पूर्व छात्रों ने लिया सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन का संकल्प

सतना । सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर में 1996 बैच के विद्यार्थियों ने अपने बैच का पुनर्मिलन कार्यक्रम आयोजित किया। पूर्व छात्र-छात्राओं ने अपने जीवन की उपलब्धियों का श्रेय विद्यालय को देते हुए अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन का संकल्प लिया।
शिशुमन्दिर सतना की गौरवशाली परंपरा के अनुसार इस बैच के विद्यार्थियों का भी विश्व्यापी विस्तार है। समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में इस बैच के विद्यार्थी कार्यरत हैं। इस दौरान सभी ने छात्र जीवन के मधुर क्षणों को पुनः याद किया और अपने आचार्यों के बीच स्वयं को पाकर भावुक भी हुए। पूर्व विद्यार्थियों को तत्कालीन प्राचार्य धर्मदास अग्रवाल, प्रबंध समिति के अध्यक्ष मणिकांत माहेश्वरी, व्यवस्थापक विकास पांडेय कोषाध्यक्ष श्रीमती मंजरी सिंह का प्रेरक उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। पूर्व छात्रों ने अपने आचार्यों को शाल, श्रीफल व उपहार देकर सम्मानित किया और विद्यालय द्वारा संचालित सेवा कार्यों में निरंतर सहयोग देने की बात कही।

सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर में 1996 बैच के विद्यार्थियों का पुनर्मिलन कार्यक्रम

महाकौशल और छत्तीसगढ़ प्रांत का शिशु वाटिका दक्षता वर्ग

जबलपुर। विद्या भारती मध्य क्षेत्र के अंतर्गत महाकौशल प्रांत एवं छत्तीसगढ़ प्रांत का शिशु वाटिका दक्षता वर्ग सरस्वती शिक्षा परिषद जबलपुर में आयोजित किया गया। प्रथम सत्र में विद्या भारती मध्य क्षेत्र के सह संगठन मंत्री माननीय डॉ. आनंद ने ECCE की बुनियादी संकल्पना विषय पर प्रबोधन किया। वर्ग की प्रस्तावना बालिका शिक्षा की अखिल भारतीय संयोजिका रेखा चुड़ासमा ने प्रस्तुत की।

उत्तर पूर्व क्षेत्र का शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग

गांधीधाम। नर्मदा पूजन, कलश स्थापना, दीप प्रज्वलन एवं वंदना के साथ उत्तर पूर्व क्षेत्र का अखिल भारतीय शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग गांधीधाम गुजरात में आयोजित किया गया। इस अवसर पर आशा बहन थानकी अखिल भारतीय शिशु वाटिका संयोजिका और जयस भाई समर्थ भारत केन्द्र के प्रमुख विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय विषय संयोजक बैठक

अयोध्या | विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा अखिल भारतीय विषय संयोजक / सह संयोजक एवं प्रभारियों की दो दिवसीय बैठक दिनांक 29, 30 अप्रैल 2023 को **"साकेत निलयम"** साकेत पुरी मार्ग निकट देवकाली वाईपास अयोध्या में सम्पन हुई। बैठक में सम्पूर्ण देश से कुल 41 बन्धु / भगिनी उपस्थित रहें। बैठक का सफलतापूर्वक संचालन श्री अवनीश भटनागर अखिल भारतीय महामंत्री, विद्या भारती ने किया।

बैठक के उदघाटन सत्र दिनांक 29 अप्रैल 2023 को श्री राम बल्लभाकुंज आश्रम के पूज्य अधिकारी एवं श्रेष्ठ संत पूज्य राजकुमार दास महाराज का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिंद चन्द्र महन्त अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र शर्मा, श्री श्रीराम आरावकर, अखिल भारतीय मंत्री डॉ. शिवकुमार शर्मा, डॉ. किशनवीर सिंह, श्री ब्रह्मा राव उपस्थित रहें।

बैठक में उद्घाटन एवं समापन सत्र सहित कुल 9 सत्र हुये। प्रशिक्षण, शारीरिक शिक्षा, योग शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, संगीत शिक्षा, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा, पूर्व छात्र परिषद, संस्कृतिबोध परियोजना, अटल टिंकरिंग लैब, अभिलेखागार, पर्यावरण जनजातीय क्षेत्र की शिक्षा, सेवा क्षेत्र की शिक्षा, वैदिक गणित, विज्ञान, बालिका शिक्षा, शिशु वाटिका आदि विषयों पर व्यापक चिंतन हुआ।

बैठक में अयोध्या महानगर के संघचालक मा. विक्रमाप्रसाद पाण्डेय, श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के ट्रस्टी डॉ. अनिल कुमार मिश्र, डॉ. दिलीप सिहं, प्रो. लक्ष्मीकान्त सिंह, श्री कौशल प्रांत प्रचारक, श्री संजय सह प्रांत प्रचारक की विशिष्ट उपस्थिति रही। बैठक की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं का कुल 20 आचार्य / प्रधानाचार्यो ने दायित्व निर्वहन किया।

श्री अवनीश भटनागर जी द्वारा शिलांग स्कूल एम कंप्यूटर सेंटर का उद्घाटन

आचार्य प्रशिक्षण वर्ग - केरल

एर्नाकुलम मंगला आचार्य प्रशिक्षण वर्ग

कालीकट मेघला आचार्य प्रशिक्षण वर्ग

पलक्कड़ मेघला आचार्य प्रशिक्षण वर्ग

भारत भारती बैतूल में आयोजित अखिल भारतीय हैंड बाल प्रतियोगिता में देशभर से आये खिलाड़ियों ने दीपमालिका के द्वारा हैंडबॉल मैदान की आकृति बनाकर संध्या आरती में भारत माता की वन्दना की।

विद्या भारती का गौरव: पूर्व छात्रों की उपलब्धियां

यूपी पीएससी (UP PSC) परीक्षा में विद्या भारती के पूर्व छात्रों ने लहराया परचम

लखनऊ। विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश के विद्यालयों के 16 छात्रों ने उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की है। विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा. हेमचन्द्र ने यूपी पीएससी में चयनित सभी पूर्व छात्रों, उनके अभिभावकों, आचार्यों को शुभकामनाएं एवं बधाई दी। उन्होंने कहा कि विद्या भारती के संस्थानों से निकले पूर्व छात्र देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं दे रहे हैं और राष्ट्र के विकास में योगदान कर रहे है।

विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश के सह प्रचार प्रमुख श्री भास्कर दुबे ने बताया कि यूपी पीएससी परीक्षा में चयनित आलोक सिंह (रानी रेवती सरस्वती विद्या निकेतन, राजापुर, प्रयागराज), गौरव त्रिपाठी (जय बजरंग विद्या मंदिर, रामनगर, अम्बेडकरनगर), अभिषेक त्रिपाठी (आनंदी देवी सरस्वती विद्या मंदिर, सीतापुर), संदीप त्रिपाठी (सरस्वती विद्या मंदिर, तुलसी नगर, अयोध्या), श्रद्धा उपाध्याय (सरस्वती विद्या मंदिर, टांडा, अम्बेडकरनगर), प्रतीक्षा त्रिपाठी (सरस्वती विद्या मंदिर, लहरपुर, सीतापुर), ज्योति जैन (सरस्वती विद्या मंदिर, रामसनेही घाट, सुमेरपुर, बाराबंकी), दिवाकर पटेल (सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट) और यूपी पीएससी (जे) में चयनित अलका मौर्या (जय बजरंग विद्या मंदिर, रामनगर, अम्बेडकरनगर) व अभिषेक त्रिपाठी (सरस्वती विद्या मंदिर तुलसीनगर, अयोध्या) के पूर्व छात्र हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के 16 छात्रों का चयन

विद्या भारती की उपलब्धियां

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सरस्वती विद्या मंदिर दीनदयाल धाम फराह मथुरा के पूर्व छात्र अमित पाठक ने अपने अथक परिश्रम से दूसरी बार उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग की परीक्षा में वरीयता सूची मे चौथा स्थान प्राप्त कर अपने पूर्वजों, परिवार, विद्यालय, गुरुजनों और अंत्योदय के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का नाम रोशन किया।

पूर्व छात्र अमित पाठक

विद्याभारती कानपुर प्रान्त से संबद्ध सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज चरखारी के छात्र शुभ चपरा ने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इंटरमीडिएट की परीक्षा में 489 / 500 (97.80%) अंक प्राप्त कर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

छात्र शुभ चपरा

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन
जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 110065

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net
www.vidyabharatisamvad.com

vbabss@yahoo.com vbsamvad@gmail.com

91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,